

महिमाकृत किया जाना क्या होता है?

उद्धार के बारे में प्रश्न

संक्षिप्त उत्तर यह है कि "महिमाकृत" किया जाना परमेश्वर की ओर से शाश्वतकालीन अवस्था में सन्तों (अर्थात्, जो बचाए गए हैं) के जीवन से पाप को अन्तिम रूप से हटा लेना है (रोमियों 8:18; 2 कुरिन्थियों 4:17)। मसीह के दूसरे आगमन पर, परमेश्वर की महिमा (रोमियों 5:2) — उसका आदर, प्रशंसा, वैभव, और पवित्रता — हम में साकार हो जाएगी; पाप के स्वभाव में बन्धे हुए नाशवान प्राणियों की अपेक्षा, हमें पवित्र अविनाशी प्राणियों में परिवर्तित कर दिया जाएगा, जिसमें हमारी पहुँच परमेश्वर की उपस्थिति के लिए सीधी और बिना किसी रूकावट के होगी, और हम अनन्त काल के लिए उसकी पवित्र सगंति का आनन्द लेंगे। महिमाकृत किए जाने पर विचार करने के लिए हमें मसीह के ऊपर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, क्योंकि वही प्रत्येक मसीही विश्वासी की "धन्य आशा" है; हम महिमाकृत किए जाने को पवित्रीकरण के कार्य की समाप्ति के रूप में विचार कर सकते हैं।

अन्तिम रूप से महिमाकृत करने के लिए हमें हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए (तीतुस 2:13; 1 तीमुथियुस 6:14)। जब तक वह वापस नहीं आता, हम पाप के बोझ से दबे हुए हैं, और शाप के कारण हमारी आत्मिक दृष्टि विकृत हो गई है। "अभी हमें दर्पण में धुँधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे; इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस समय ऐसी

पूरी रीति से पहिचानूँगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूँ" (1 कुरिन्थियों 13:12)। प्रत्येक दिन, हमें आत्मा में परिश्रम करना चाहिए ताकि हम "शरीर" (पापी स्वभाव) को मार सकें (रोमियों 8:13)।

अन्त में हम कब और कैसे महिमाकृत किए जाएंगे? अन्तिम तुरही के बजने के समय, जब यीशु आएगा, सन्त जन एक मौलिक, तत्कालिक रूपान्तरण को पाएंगे ("परन्तु हम सब बदल जाएँगे और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा" — 1 कुरिन्थियों 15:51); तब "विनाशी" अपने ऊपर "अविनाशी" (1 कुरिन्थियों 15:53) को पहिन लेगा। तौभी 2 कुरिन्थियों 3:18 स्पष्ट रूप से एक भेद भरे अर्थ में इसे इंगित करता है कि "हम सब," वर्तमान में, "उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप" देखेंगे और उसके स्वरूप में "अंश अंश करके बदलते चले जाएंगे" (2 कुरिन्थियों 3:18)। यदि कोई यह सोचता है कि यह देखना और बदलना (पवित्रीकरण के अंश के रूप में) विशेष रूप से सन्तों का काम है, तो पवित्रशास्त्र निम्नलिखित जानकारी को जोड़ता है: "यह प्रभु की ओर से है जो आत्मा है।" दूसरे शब्दों में, यह प्रत्येक विश्वासी को दी जाने वाली आशीष है। यह हमारे अन्तिम रूप से महिमाकृत किए जाने का उल्लेख नहीं करता है, परन्तु पवित्रीकरण के एक पहलू का जिस के द्वारा आत्मा हमें अभी वर्तमान में रूपान्तरित कर रहा है। आत्मा और सच्चाई में हमें पवित्र करने के उसके काम के लिए प्रशंसा करें (यहूदा 24-25; यूहन्ना 17:17; 4:23)।

हमें समझना चाहिए कि पवित्रशास्त्र महिमा के स्वभाव — अर्थात् दोनों में परमेश्वर की अद्वितीय महिमा और उसके आने पर उसके साथ हमारे सहभागी होने के बारे में क्या सिखाता है। परमेश्वर की महिमा न केवल उस अगम्य ज्योति को, जिसमें प्रभु वास करता है (1 तीमुथियुस 6:15-16), अपितु उसके आदर (लूका 2:13) और पवित्रता के लिए भी सन्दर्भित करती है। भजन संहिता 104:2 में उल्लिखित "तू" एक ही परमेश्वर है, जिसे 1 तीमुथियुस 6:15-16 में सन्दर्भित किया गया है; क्योंकि "अमरता केवल उसी के पास है" और उसने स्वयं को "अगम्य ज्योति में रहते" हुए ढका हुआ है (भजन संहिता 104:2; की तुलना 93:1; अय्यूब 37:22; 40:10 से करें)। जब प्रभु यीशु न्याय को संचालित करने के लिए अपनी बड़ी महिमा में वापस लौटेगा (मत्ती 24: 29-31; 25: 31-35), वह ऐसा एकमात्र प्रभुता सम्पन्न प्रभु के रूप में करेगा, जिसने अकेले के पास ही शाश्वतकाल के लिए प्रभुत्व होगा (1 तीमुथियुस 6:14-16)।

सृजे हुए प्राणी परमेश्वर की भय योग्य महिमा को देख भी नहीं सकते हैं; जैसे यहजेकल (यहेजकेल 1:4-29) और शिमौन पतरस (लूका 5:8) के साथ हुआ, यशायाह तो पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में आत्म-दोष से चकनाचूर हो गया था। सारापों की घोषणा, "पवित्र, पवित्र, पवित्र, सेनाओं का यहोवा, सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है" के पश्चात् "यशायाह ने कहा कि, "हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ; और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ, क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है!" (यशायाह 6:4)। यहाँ

तक कि सारापों ने दिखाया कि वे ईश्वरीय महिमा को देखने के योग्य नहीं थे, उनके चेहरे उनके पंखों से ढंके हुए थे।

परमेश्वर की महिमा को "गम्भीर" या "भारी" कहा जा सकता है; इब्रानी शब्द काबोद का शाब्दिक अर्थ है "भारी या बोझिल" है; अक्सर, काबोद का बाइबल में उपयोग चित्रों वाली भाषा में किया गया है (उदाहरण के लिए, "पाप के साथ भारी होना"), जिस से हमें सम्मानित, प्रभावशाली या आदर के योग्य व्यक्ति के "महत्व" का विचार मिलता है।

जब प्रभु यीशु ने देहधारण किया, तो उसने परमेश्वर की "गम्भीर" पवित्रता और उसकी कृपा और सच्चाई की पूर्णता का प्रकाशन किया ("और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" [यूहन्ना 1:14; की तुलना 17:1-5 से करें])। देहधारी मसीह के द्वारा प्रकट महिमा आत्मा की सेवकाई के साथ आती है (2 कुरिन्थियों 3:7); यह अपरिवर्तनीय और स्थायी है (यशायाह 4:6-7; की तुलना अय्यूब 14:2; भजन संहिता 102:11; 103:15; याकूब 1:10 से करें)। परमेश्वर की महिमा के अतीत में प्रगटीकरण अस्थायी थे, जैसे मूसा के चेहरे से परमेश्वर की महिमा के लुप्त होने वाले प्रभाव का बने रहना। मूसा ने अपना चेहरा छिपा लिया ताकि कठोर मन वाले इस्राएली यह न देख सकें कि महिमा लुप्त हो रही थी (1 कुरिन्थियों 3:12), परन्तु हमारी घटना में परदे को मसीह के

माध्यम से हटा दिया गया है, और हम प्रभु की महिमा को प्रदर्शित करते हैं और आत्मा के द्वारा उसके जैसे बनने की खोज में रहते हैं।

अपनी महायाजकीय प्रार्थना में, प्रभु यीशु ने विनती की थी कि परमेश्वर हमें उसकी सच्चाई से पवित्र करेगा (अर्थात्, हमें पवित्र बना; यूहन्ना 17:17); यदि हम यीशु की महिमा को देखना चाहते हैं और अनन्त संगति में उसके साथ रहना चाहते हैं तो पवित्रता आवश्यक है (यूहन्ना 17:21-24)। "हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों, कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा" (यूहन्ना 17:24)। यदि सन्तों को महिमाकृत किया जाना पवित्रशास्त्र में प्रकट पद्धति का पालन करता है, तो इसमें परमेश्वर की महिमा (अर्थात् पवित्रता) को साझा करना अवश्य सम्मिलित होगा।

फिलिप्पियों 3:20-21 के अनुसार, हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, और जब हमारा उद्धारकर्ता लौटता है, तो वह हमारे दीन हीन शरीर के "रूप को बदलकर अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।" यद्यपि, अभी तक यह बात प्रकाशित नहीं हुई है कि हम कैसे होंगे, तथापि, हम जानते हैं कि, जब वह अपनी बड़ी महिमा में वापस लौटेगा, तो हम उसके जैसा होंगे, क्योंकि हम उसे देखेंगे (1 यूहन्ना 3:2)। हम पूरी तरह से हमारे प्रभु यीशु के स्वरूप में ढले हुए होंगे और उसके जैसे होंगे कि हमारी मानवता पाप और इसके परिणामों से मुक्त होगी। हमारी धन्य आशा हमें पवित्रता पर

पहुँचाएगी, आत्मा हमें सक्षम करेगा। "और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है" (1 यूहन्ना 3:3)।

स्रोत / Source: <https://www.gotquestions.org/Hindi/Hindi-glorification.html> | English: <https://www.gotquestions.org/glorification.html>

www.GotQuestions.org · <https://www.gotquestions.org/Hindi> · © Copyright
Got Questions Ministries · questions@gotquestions.org